अश्वक्लांता देवालय परिचालना समिति के "महा विष्णु यज्ञ" में माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया के संबोधन का प्रारूप

दिनांक 16 मार्च 2024, शुक्रवार	समय : 11.00 AM	स्थान : अश्वक्लांता देवालय

- अश्वक्लांता देवालय के पुजारी एवं अध्यक्ष
  श्री लकशेश्वर शर्मा जी,
- कामरूप अकादमी पूर्व प्रधानाचार्य श्री तिलक शर्मा जी,
- हाजो के माधव मंदिर के पूर्व पुजारी
  श्री नृपेंद्र कुमार भगवती जी,
- दौल गोबिन्द मंदिर के अध्यक्ष श्री रातुल बरुवा जी,
- उपस्थित अन्य अतिथिगण
- मंदिर संचालन समिति के सदस्य एवं कार्यकर्तागण,
- मीडिया के हमारे मित्रों,
- देवियों और सज्जनों,

नमस्कार!

 ज मुझे यहां “महा विष्णु यज्ञ” के शुभ अवसर पर विष्णु-तीर्थ अश्वक्लांता मंदिर में प सभी के बीच उपस्थित होकर बहुत प्रसन्नता हो रही है। वास्तव में यह मेरे में खुशी की बात है कि मुझे फिर से इस ऐतिहासिक मंदिर के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हु ।

महाबाहु ब्रह्मपुत्र के तट पर स्थित इस मंदिर का ऐतिहासिक और पौराणिक महत्व रहा है। मान्यता है कि भगवान श्रीकृष्ण जब नरकासुर को मारने के लिए उसकी खोज में निकले थे, उस समय इस स्थान पर कर उनका घोड़ा थक गया था। इसलिए इस जगह का नाम अश्वक्लान्ता पड़ा। अश्व का मतलब घोड़ा और क्लांत का अर्थ थकना है।

उस स्थान पर दो मंदिर हैं - एक पर्वत की तलहटी में और दूसरा ऊपर पहाड़ी पर स्थित है जिनके नाम “कुर्मयनर्दन” और “अनंतशायी” है।

अश्वक्लांता के ये प्राचीन मंदिर भक्तों के साथ-साथ पर्यटकों को भी कर्षित करता है। मंदिर से विशाल ब्रह्मपुत्र नदी और गुवाहाटी शहर का सुंदर और मनमोहक दृश्य दिखाई देता है।

मुझे खुशी है कि भारत सरकार ने ब्रह्मपुत्र के किनारे स्थित 7 धार्मिक स्थलों को जलमार्ग के माध्यम से जोड़ने की अभिनव योजना बनाई है। इन मंदिरों में अश्वक्लांता मंदिर भी शामिल है। इन मंदिरों को फेरी सेवा से जोड़ने से तीर्थयात्रियों और पर्यटकों को एक अनोखा अनुभव प्राप्त होगा और इससे नदी पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा।

देवियो एवं सज्जनो,

मुझे बहुत खुशी है कि इस ऐतिहासिक मंदिर में तीन दिवसीय महा विष्णु यज्ञ का योजन किया जा रहा है। भगवान विष्णु सृष्टि के पोषक और रक्षक हैं। उनकी सच्ची श्रद्धा से राधना करने से सभी भक्तों के कष्टों का निवारण होता है और विश्व का कल्याण होता है।

भगवत गीता के अध्याय-3 में कहा गया है :

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।

परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ।।

अर्थात् -

 पके बलिदान से देवता प्रसन्न होंगे और मनुष्यों एवं देवताओं के बीच के सहयोग से विश्व में सुख, समृद्धि और शान्ति व्याप्त होगी।

देवियो और सज्जनो,

प्राचीनकाल में ऋषि-मुनियों ने मानव की शारीरिक, मानसिक और त्मिक शान्ति के लिए अनेक विधानों की व्यवस्था की थी, जिनका पालन कर मानव अपनी त्मशुद्धि, त्मबल-वृद्धि और रोग्य की रक्षा कर सकता है, यज्ञ भी इन्हीं विधि-विधानों में से एक है।

यज्ञ एक विशिष्ट ध्यात्मिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने जीवन को सफल बना सकता है। यज्ञ के जरिये ध्यात्मिक संपदा की भी प्राप्ति होती है। श्रीमद्भागवत् गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने यज्ञ करने वालों को परमगति की प्राप्ति की बात की है।

यज्ञ को शास्त्रों में सर्वश्रेष्ठ कर्म कहा गया है। इसकी सुगंध समाज को सुसंगठित कर एक सुव्यवस्था देती है। ऐसा इसलिए, क्योंकि यज्ञ करने वाले अपने प में दिव्यात्मा होते हैं। यज्ञ मनोकामनाओं को सिद्ध करने वाला होता है।

विधि-विधान से किए गए यज्ञ के धुएं से कई तरह के रोग नष्ट हो जाते हैं। वैज्ञानिक भी ज यज्ञ की महत्ता को स्वीकार करने लगे हैं। उनके अनुसार यज्ञ के सुगन्धित धुएँ में एक विशेष प्रकार की गंध होती है, जो रोगाणुओं (वायरस) को मारने या निष्क्रीय करने में प्रभावकारी है।

यज्ञ से सम्बन्धित कई वैज्ञानिक खोजें हुई हैं, विशेषकर यज्ञ से उत्पन्न सुगन्धित धुँए पर। इस विषय पर वैज्ञानिकों का कहना है कि यज्ञ के इस सुगन्धित धुँए का असर हमारे दिमाग पर होता है, जिससे हमारी कार्य-कुशलता बढ़ जाती है।

दवियो एवं सज्जनो,

यज्ञ में जिन मन्त्रों का उच्चारण किया जाता है उन की शक्ति असंख्यों गुनी अधिक होकर संसार में फैल जाती है, और उस शक्ति का लाभ सारे विश्व को प्राप्त होता है।

यज्ञ की ऊष्मा मनुष्य के अन्तःकरण पर देवत्व की छाप डालती है। जहाँ यज्ञ होते हैं वह भूमि एवं प्रदेश सुसंस्कारों की छाप अपने अन्दर धारण कर लेता है और वहाँ जाने वालों पर भी दीर्घ काल तक प्रभाव डालती रहती है।

प्राचीन काल में तीर्थ वहीं बने हैं जहाँ बड़े-बड़े यज्ञ हुए थे। जिन घरों में, जिन स्थानों में यज्ञ होते हैं, वह भी एक प्रकार का तीर्थ बन जाता है और वहाँ जिनका गमन रहता है उनका मन विकसित एवं सुसंस्कृत हो जाता है।

यज्ञों का शोध किया जाए तो प्राचीन काल की भाँति यज्ञ से अनेकों सिद्धियों को प्राप्त किया जा सकता है। प्रखर बुद्धि, निरोगिता एवं सम्पन्नता प्राप्त की जा सकती है।

मैं समझता हूं कि वर्तमान के धुनिक युग में प्राचीन काल की भाँति यज्ञ का लाभ पुनः प्राप्त हों, इसके लिए शोध किया जाना चाहिए। इसके लिए यह जरूरी है कि जनसाधारण का ध्यान यज्ञ के प्रति कर्षित किया जाए और साधारण यज्ञ योजनों का प्रचार बढ़े।

अंत में, मैं इस महा विष्णु यज्ञ की सफलता के लिए योजकों को शुभकानाएं देता हूं।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया,

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भागभवेत।

इसी कामना के साथ मैं अपने शब्दों को विराम देता हूं।

धन्यवाद !

जय हिन्द !